द्वितीय अध्याय : प्रेमचंद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय।

१] वरदान

२] प्रतिज्ञा

३] सेवासदन

४] प्रेमाश्रम

५] निर्मला

६] रंगभूमि

७] कायाकल्प

८] गबन

९] कर्मभूमि

१०] गोदान

१] वरदान [१९०२]

` वरदान ` की कहानी असफल प्रेम-कहानी है। पर प्रेमचंद इस में विफल प्रेमी प्रताप के प्रेम का उदात्तीकरण करके उसे समाज-सेवी बना देते हैं। इस रचना में हमारी परंपरागत वैवाहिक पध्दति के , दोष को स्पष्ट किया गया है। प्रताप गरीब परिवार का लडका है, बिरजन अमीर घराने की है। अमीर की लडकी का विवाह गरीब से कैसे हो सकता है ? दानों छटपटाते रह जाते हैं।

यह रचना संयोग तथा घटनोओं पर आधारित एक साधारण रचना है। बिरजन का कमलाचरण से विवाह हो जाता हैं। विवाहोपरांत बिरजन की मानसिक स्थिति को प्रेमचंद मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रकट नहीं कर सके। वह एक साथ ही कमलाचरण और प्रताप दोनों से प्रेम जताती प्रतीत होती है। प्रताप के वियोग में वह बीमार हो जाती है और उसके आने पर ही अच्छी होती है। किंतु इसी के साथ यह भी दिखाया गया है कि बिरजन कमला के प्रति भी प्रेमपूर्ण व्यवहार रखती है। यह स्थिति मनो-वैज्ञानिक दृष्टि से दोषपूर्ण ही है।

वास्तव में प्रेमचंद एक ओर बिरजन को कमला के प्रति अपना धर्म निभाने का, परंपरागत आदर्श पालने का आग्रह करके चले हैं तो दूसरी ओर प्रताप के चरित्र को ऊँचा रखने के मोह में भी भटक गए हैं।

माधवी से प्रताप कहता है-तुम अगर मेरी हो सकती हो तो मैं अपना वैराग्य त्याग सकता हूँ। लेकिन बाद में वह पीछे हट जाता है। कमलाप्रसाद के मरने के पश्चात प्रताप और बिरजन का मिलाप नहीं हो पाता। यहाँ पर प्रेमचंद का आदर्शवादी दृष्टिकोण परिहास बनकर रह जाता है। उन्होंने अपने इस उपन्यास में सामाजिक स्थितिका वर्णन सुंदर ढंग से किया है। बिरजन एक पत्र में लिखती है- " मनुष्यों को देखो तो शोचनीय दशा हड्डियां निकली हुई हैं। वे विपत्ति की मूर्तियाँ और दरिद्रता के जीवित चित्र हैं। किसी के

शरीर पर एक फटा वस्त्र नहीं है और कैसे भाग्यहीन कि रात-दिन पसीना बहाने पर भी भरपेट रोटियाँ नहीं मिलती।" [१]

२] प्रतिज्ञा [१९०६]

`वरदान` की अपेक्षा `प्रतिज्ञा` एक सुलझी हुई सुन्दर रचना है। इस में विधवा नारी की समस्या है। इसका भी सामाजिक परिवेश सीमित ही है। इस उपन्यास का सम्बन्ध प्रेमचंद के व्यक्तिगत जीवन से भी है। इस समय प्रेमचंद विधवा-समस्या पर विचार मग्न थे। इसी का परिणाम है कि सन १९०५ में उन्होंने शिवरानीदेवी नामक एक विधवा से विवाह करके अपने घर को सुखी बनाया। ऐसा लगता है कि अपने उपन्यास की एक बहुत बडी यथार्थ कमी को उन्होंने जीवन की इस घटना से पूरा किया। वह इस प्रकार कि `प्रतिज्ञा` में विधवा पूर्णा कहीं ठिकाना न पाकर, कमला प्रसाद के आश्रम को कलुषित जानकर, अमृतराय के विधवा-श्रम में चली जाती है। पूर्णा विधवा है, समझदार है उसका विवेक पुनर्विवाह के पक्ष में है। अमृतराय दुहाजू है और उसका संकल्प है कि विधवा से ही शादी करेगा। ऐसी अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करके प्रेमचंद ने दोनों को नहीं मिलाया।

`प्रतिज्ञा` में पूर्णा और कमला प्रसाद के मानसिक संघर्ष का वास्तविक चित्रण किया है। अमृतराय, सुमित्रा, दिनानाथ आदि का चरित्र-चित्रण सजीव बन पडा है।

३] सेवासदन [१९१६]

इस में प्रेमचंद का मुख्य ध्यान वेश्यासमस्या पर रहा पर उसके साथ अन्य अनेक बुराइयों का पर्दाफाश किया गया है। समाज की किन बुराइयों से हमारी सुमन जैसी कुल-कन्याएँ वेश्या बनती हैं इसे अत्यंत सजीवता और

मनोविज्ञानिकता के साथ प्रकट किया हैं।

सुमन एक अच्छे कुल की कन्या है, जो माता-पिता के लाड-प्यार में पली है। उसके पिता दरोगा कृष्णचंद पुलिस इन्स्पेक्टर हैं- बडे ईमानदार सज्जन पुरुष, जो एक पैसा रिश्वत नहीं लेते और इसी से अपने विभाग के सभी पुलिस-कर्मचारियों, अफसरों और मातहतों की नजरों में खटकते हैं।

दरोगा कृष्णचंद अपनी प्यारी पुत्री के लिए वर की तलाश करते हैं जहाँ-कहीं योग्य वर देखते हैं, देहेज की भारी माँग होती है। दहेज कहाँ से दे। उन्होंने कभी एक पैसा भी रिश्वत का नहीं लिया। दहेज की समस्या उन्हें अब रिश्वत लेने को तैयार करती हैं।

यहाँ शोषण का बडा सुन्दर चित्रण किया है। महन्त रामदास बाँके बिहारी के नाम पर गरीबों का शोषण करता हैं। मुफ्त की कमाई से उसने कई मुस्टंडे पाल रखे हैं। जिनसे गरीब किसानों को भयभीत करता है। वह जबरदस्ती चंदा वसूल करता है, और बेचारे चेतु अहीर को चंदा न दे सकने कारण विरोध करने पर इतना पिटवाता है क कि बेचारा तडप-तडप कर मर जाता है। दरोगा कृष्ण चंद को अवसर मिल जाता है। वह महंत से तीस हजार रुपये रिश्वत लेकर मामले को रफा-दफा कर देता है। दरोगा ने रुपये स्वयं हजम करने चाहे। अपने सिपाहियों को कुछ नहीं दिया। रुपयों की थैली देनेवाला महन्त का कारिन्दा दलाली चाहता है। पर दरोगा किसी को हिस्सा नहीं बाँटता। शिकायत हो जाती है और तलाशी लेने पर दरोगा के घर से रिश्वत के रुपये बरामद हो जाते हैं। दरोगा को सजा हो जाती है।

इन परिस्थितियों में सुमन का विवाह एक अधेड उम्र के दुहाजू से होता है। घर में दरिद्रता के कारण उसकी इच्छाएँ बुझी-बुझी रहती हैं। उसके व्दार के सामने गली-मुहल्ले के शोहदे और चंचल युवक चक्कर लगाते हैं। वह सबसे बचती है।

उसके घर के सामने ही भीलीबाई नामक एक वेश्या का मकान है। वह उससे घृणा करती है। वह सोचती है कि वह गरीब होते हुए भी वेश्या से

बहुत ऊँची है। एक दिन वेश्या के यहाँ मुजरे में शहर के धनी-मानी युवक आते हैं जिन में उसका अधेड पति भी सम्मिलित है तो उसका मन शंका से भर जाता है। भगवान के मंदिर में भी वेश्या का सम्मान होता है और पार्क में चौकीदार भोलीबाई को सलाम करता है तो वह उत्तेजित होती है। सज्जन वकील भी वेश्या भोलीबाई के यहाँ मुजरा कराते हैं तो उसका आत्मविश्वास टूट जाता है। वह सोचती है कि क्या भोलीबाई से वह रूप में कम है ?

उसका पति संशय से भर जाता है। अधेड उम्र का व्यक्ति सुंदर पत्नी के बारे में आशंकित हो जाता है। जब अपनी सखी सुभद्रा के यहाँ से देर से आती है तो उसे डंडे से मारकर पति घर से निकाल देता है- "चल छोकरी, मुझे न चरा। ऐसे-ऐसे कितने भले आदमियों को देख चुका हूँ। वह देवता है, उन्हीं के पास जा यह झोपडी तेरे रहने योग्य नहीं है। तेरे हौसले बढ रहे हैं। अब तेरा गुजर यहाँ न होगा।..... नहीं, जाओगी क्यों नहीं ? वहाँ ऊँची अटारी तेर को मिलेगी, पकवान खाने को मिलेंगे, फुलों की सेज पर सोओगी, नित्य राग रंग की धूम रहेगी।" [२] सुमन घर से जाकर भोलीबाई के यहाँ अलग से रहने लगती है लेकिन समाज किसी अबला को आसानी से रहने देगा ? अंत में उसे दालमंडी का कोठा सजाना ही पडता है।

४] प्रेमाश्रम [१९२२]

इस रचना में प्रथम बार जमींदार और किसानों के संघर्ष का खुलकर चित्रण हुआ है। 'प्रेमाश्रम' में जमींदार [ज्ञानशंकर] की कथा प्रमुख है।

इसके आरंभ में ही किसान के मन का विद्रोह प्रकट किया गया है।

जब जमींदार का आदमी १० छटाँक के बाजार-भाव के की बजाय, जबरदस्ती रुपये सेर के हिसाब से घी के दाम देता है और मनोहर के विरोध करने पर कहता है- "जब जमींदार की जमीन जोतते हो तो उसके हुक्म के बाहर नहीं जा सकते।" [3] तो मनोहर स्पष्ट शब्दों में कहता है- " जमीन कोई खैरात में जोते हैं ? उसका लगान देते हैं। एक किश्त भी बाकी पड़ जाए तो नालिश होती है। ..... न कारिन्दा कोई काद् है, न जमींदार कोई हौआ है। यहाँ कोई दबैल नहीं है जब कौडी-कौडी लगान चुकाते हैं तो धौंस क्यों सहें ? " [4]

मनोहर का बेटा बलराज नई पीढी का और भी उग्र नवयुवक है। वह मरने-मारने तक की चुनौती देता है। प्रेमचंद जमींदार और किसानों के संघर्ष को सुलझाने के लिए म. गांधी जी के मत के अनुसार सुलझाना चाहते है। हृदय-परिवर्तन, समझौता, अहिंसात्मक क्रांति, सत्याग्रह आदि साधनों से ही उनका आदर्श पात्र प्रेमशंकर संघर्ष करता है और प्रेमचंद की सुखद कल्पना से विजयी होता है। क्यों कि अन्ततक आते-आते सब का हृदय-परिवर्तन हो जाता है। मायाशंकर अपनी रियासत छोड देता है। किसानों में उसे बाँट दिया जाता है, अभियुक्त छूट जाते है। इरफानअली, इजादहुसैन, ज्वालासिंह, डॉ. प्रेमनाथ आदि सबका मन अपनी स्वार्थ वृत्ति के कारण ग्लानि से भर जाता है, सबका हृदय परिवर्तन हो जाता है।

इसमें मुख्य चित्रण जमींदार का ही है और उद्देश्य है जमींदारी-पध्दति के दुष्परिणाम प्रकट करना प्रेमचंद जमींदारी के सभी पहलुओं-प्रभाव, ऐश्वर्य, शोषण, अन्याय, अधिकार-लिप्सा, विलास-लोलुपता आदि पर प्रकाश डालते हुए अन्त में इस पध्दति को मृत्यु-सम दण्ड देते हैं।

५] निर्मला [१९२३]

'निर्मला' प्रेमचंद का एक छोटा सामाजिक उपन्यास है। इसकी मूल समस्या है बेमेल विवाह और उसके भयंकर दुष्परिणाम। प्रेमचंदजी ने हमारी वैवाहिक पध्दति के दोषों को अपनी रचनाओं में खूब प्रकट किया है। रुपयों की थैलियों से सौदे तय किए जाते हैं। लडके-लडकी के स्वभाव, आकृति-प्रकृति, वय, आदि का मिलान जरूरी नहीं समझा जाता है। समाज में दहेज की प्रथा से अनर्थ हो रहा है, इसी के कारण एक पन्द्रह वर्षीय कलि निर्मला का विवाह, उसकी विधवा माता को एक ५० से भी अधिक वय के कुरूप, तोन्दु, दुहाजु किंतु संपन्न वकील लाला तोताराम से करना पडता है। तोताराम के तीन बच्चों की विमाता के रूप में निर्मला को, बच्चों से पूरा स्नेह होने पर भी लांछित किया जाता है। दुष्ट पति के संशय और विक्षिप्त परिस्थितियों से घर तबाह हो जाता है। तोताराम निर्मला से कहता है- "हट जाओ सामने से, नहीं तो बुरा होगा।.....यह तुम्हारी करनी है। तुम्हारे ही कारण आज मेरी यह दशा हो रही है। छ साल पहले क्या इस घर की यही दशा थी? तुमने मेरा बना-बनाया घर बिगाड दिया। तुमने लहलहाते बाग को उजाड डाला॥

निर्मला अंत में कहती है- "मैं तो अभागिन हूँ, आप कहेंगे तब जाऊँगी। न जाने ईश्वर ने मुझे जन्म क्यों दिया था?" [६]

अनमेल विवाह के कारण परिवार किस तरह तबाह और बरबाद होता है यही दिखाना प्रेमचंद का इस उपन्यास में उद्देश्य है।

६] रंग-भूमि [१९२४]

इस उपन्यास में प्रेमचंद ने पहली बार देशी रियासतों की बिगडी स्थिती, राजाओं के अत्याचार और अन्याय को प्रस्तुत करके इस ओर देश

का ध्यान आकर्षित किया। देशी रियासतों में बेचारे किसानों की और भी बुरी अवस्था है। प्रेमचंद ने पीडित प्रजा के साथ अपनी सच्ची सहानुभूति दिखाई है।

प्रेमचंद ने पूँजीवाद के आगमन और पूँजीवादी पध्दति के दोषों को प्रकट किया है। यह पूँजीवादी पध्दति जमींदारी पध्दति से भी अधिक हानिकारक और खतरनाक है। सामंतवाद ने दयनीय अवस्था ही बनाई थी, पर यह पूँजीवाद [illegible] तो अस्तित्व के लिए ही खतरा बनकर आया है। गरीबों की झोपडियाँ को अ उजाड कर यह कल-कारखाने बना रहा है। गाँवों का सरल निष्कपट और उच्च नैतिक जीवन नष्ट करके यह पूँजीवाद उसे कलुषित कर रहा है।

इस उपन्यास में सूरदास नामक एक अंधा है जिसके पास चंद बीघे जमीन है। वह भीख माँगता है दैव ने उसे कदाचित भीख माँगने के लिए बनाया है। वह हर दिन तागे के पीछे दौडकर भीख माँगता है। उसके जमीन की आवश्यकता जॉन सेवक नामक एक पूँजीपति को पडती है और अंधा उसकी रक्षा के लिए संघर्ष करता है। जॉन सेवक वहाँ एक सिगरेट का कारखाना खोलना चाहता है। क कारखाने के कारण किन समस्याओंका सामना करना पडता है, यह सूरदास जानता है- "सरकार, बहुत ठीक कहती है, मुहल्ले की रौनक जरुर बढ जायगी, रोजगारी से लोगों को फायदा भी खूब होगा लेकिन जहाँ यह रौनक बढेगी वहाँ ताडी-शराब का भी परचार बढ जाएगा, कसबियाँ भी तो आकर बस जाएँगी परदेशी आदमी हमारी बहू-बेटियों को घूरेंगे। कितना अधरम होगा।" [7]

शायद इसी भूमिका में प्रेमचंद ने सूरदास के संघर्ष को प्रस्तुत किया है। वह अपने संघर्ष में हार जाता है, पूँजीवाद की विजय होती है, गाँव की धरती पर पूँजीपति की मिल स्थापित हो जाती है, मजूरों का नैतिक पतन होता है, जुआ शराब का हुल्लड मचने लगता है और सारा आंदोलन विफल हो जाता है।

७] कायाकल्प [१९२८]

कथानक की दृष्टि से `कायाकल्प` प्रेमचंदजी की सर्वाधिक शिथिल और जटिल रचना है। यह प्रेमचंदजी का अलग ढंग का उपन्यास है। इसमें प्रेमचंद मुख्य तथ्य तो यह सिध्द करना चाहते हैं कि सच्ची मानसिक शांति प्रेम में है वासना में नहीं। वासना सदा अतृप्त और बैचेन रहती है। `कायाकल्प` में अध्यात्मिक पृष्ठभूमि पर जगदीशपुर की रानी देवप्रिया तथा उसके पति के चरित्र के माध्यम से जन्म-मरण के कुछ रहस्यों पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है। रानी देवप्रिया की वासना सदा अतृप्त और बेचैन रहती है। उसे मानो युग-युग की वासना-पिपासा है। वह अतृप्ति की अग्नि में जलती रहती है। कमला के रूप में वह शंखधर को पाती है। पर जैसे ही दोनों वासना के अलिंगन में आबध्द होते है, शंखधर की जीवन लीला समाप्त होने लगती है। वह कहता है- "प्रिये, फिर मिलेंगे। यह लीला [वासना तृप्त करने के लिए बार-बार जन्म लेने और मिलने की लीला] उस दिन समाप्त होगी जब प्रेम में वासना न रहेगी।" ८

वही देवप्रिया वासना को ही सबकुछ मानती थी, अपने वासना को तृप्ति देने के लिए महेंद, विक्रमसिंह, शंखधर के रूप में कई पतियों को नए-नए जन्म में पाती है। और अंततक अतृप्त रहती है। वह इस घटना से सचेत होती है और तपस्विनी बन जाती है। उसकी मोह निद्रा नष्ट हो जाती है और वह समझती है कि वासनाओं से मुक्ति ही तो जीवन-मुक्ति है। यही तो सच्चा कायाकल्प है।

`कायाकल्प` में प्रेमचंद ने हिंदू-मुस्लिम धार्मिक दंगों का भी सजीव चित्रण किया है।

`कायाकल्प` में चित्रित जन्म-जन्मांतरवाद और अलौकिक चमत्कार आदि वैज्ञानिक दृष्टि से संदिग्ध ही है। यदि रानी देवप्रिया और उसके पतियों के

भिन्न-भिन्न जन्मों की बात तथा कथा के चमत्कारी अंशो को स्पक मान लिया जाय तो कथा संगठन में शिथिलता होते हुए भी कथा में रोचकता है।

इस प्रकार`कायाकल्प` उपन्यास प्रेमचंद की उपन्यास परंपरा के विरुध्द लगता है।

८] गबन [१९३०]

प्रेमचंद ने पहली बार`गबन` में बेईमानी, रिश्वत, छूट, हेरा-फेरी आदि समस्याओंको विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है।

मुंशी दीनदयाल अपनी लडकी जालपा की शादी महाशय दयानाथ के पुत्र रमानाथ से करते हैं। दीनदयाल दिल खोलकर खर्च करते हैं, क्योंकि उनका वेतन चाहे केवल पाँच रुपये था, पर`ऊपर की आमदनी` का कोई हिसाब नहीं था। दूसरी ओर रमानाथ सुंदर और सजीला जवान है। उसके पिता महाशय दयानाथ बडे ईमानदार आदमी हैं। उन्होंने कभी एक पैसा भी रिश्वत का नहीं लिया। वह ऐसी पाप की कमाई से घृणा करते हैं।

रमानाथ अपनी पत्नी जालपा से घर कीर्ई स्थिति छिपा कर रखता है। वह उलटा बहुत डींग उडाता है।- बहुत धन है, जायदाद है, बैकों में रुपया पडा है।

जालपा के मन में चन्द्रहार की लालसा बचपन से थी। रमानाथ सराफ से उसके लिए कंगन और हार उधार लाता है, तभी वह प्रसन्न होती है। परंतु इस सारी परिस्थिति के पीछे पति व्दारा [illegible] वास्तविकता से दुराव है। यदि उसे मालूम हो जाता कि जेवर उधार में आए

हैं और घर की वास्तविक स्थिति वह नहीं जो रमानाथ शेखी में बताया करता था, तो वह कभी जेवरों के लिए आग्रह न करती- "जब तुम्हारी आमदनी इतनी कम थी तो गहने लिये ही क्यों ? मैंने तो कभी जिद न की थी। और मान लो, मैं दो-चार बार कहती भी, तो तुम्हें समझ-बूझकर काम करना चाहिए था। " ९

वह अपनी झूठी शान के लिए परेशान करता है, इतना ही नहीं तो अपनी पत्नी को परेशान में रखता है। अपना वेतन अधिक होने की झूठी बात वह पत्नी को बताता है। रतन ने कंगन बनवाने के लिए जो रुपये दिये थे, उन्हें ब सराफ़ि में देकर अपनी साख रखना चाहता है। परंतु रतन की शंका बढ जाती है, और वह रुपयों के लिए तकाजा करती है। तब रमानाथ चुंगी के रुपये रतन को देता है और सरकारी गबन के भय से भाग जाता है।

प्रेमचंदजी ने रतन और बूढे वकील के अनमेल विवाह का करुण चित्रण भी इसमें किया है। अनमेल विवाह पध्दति के दुष्परिणाम एवं हमारे समाज में नारी की दयनीय दशा का करुणापूर्ण चित्रण भी इसमें पाया जाता है।

९] कर्मभूमि [१९३२]

` कर्मभूमि ` में शहर की और गाँव की दो अलग-अलग कथाएँ हैं। प्रेमचंदजी ने ` कर्मभूमि ` में अछूत-समस्या को प्रमुखता दी है, साथ ही इसमें किसानों की समस्या भी है।

मंदिरों में बेचारे भंगी-चमारों की छाया भी पडने नहीं देते। अछूतों को सबसे पीछे भी नहीं बिठाया जाता। उनकी उपस्थिति धर्मात्माओं को नागवार हो जाती है। कई आदमी जूते लेकर उन गरीबों पर टूट पडते हैं। भला इससे बढकर अधर्म और क्या हो सकता है ? डॉ. शांतिकुमार भक्तों को धिक्कारते हैं- "वाह रे ईश्वर के भक्तों। वाह। क्या कहना है तुम्हारी

भक्ति का। जो जितने जूते मारेगा, भगवान उस पर उतने प्रसन्न होंगे।... ..... आप लोगों ने हाथ क्यों बंद कर लिए ? लगाइए कस-कसकर। और जूतों से क्या होता है, बंन्दुके मँगाइए और धर्म-द्रोहियों का अंत कर डालिए।" १०

उपन्यास का दूसरा प्रमुख पात्र अमरकांत है जिसके पिता एक बडे व्यापारी होते हुए भी माता न होने के कारण अमरकांत स्कूल की ई फीस को तरसते हैं। अमरकांत चरखा चलाते हुए अपनी शिक्षा पूरी करते है।

शहर में अछूतों का विवाह इतना बढता है क कि गोली तक चलायी जाती है।

प्रस्तुत उपन्यास में भारतीय नारी का शंखनाद भी पाया जाता है। सुखदा, सकीना, और नैना जागृत भारत की नारियाँ हैं। इतनाही नहीं तो उपन्यास में पारिवारिक दूर्व्यवस्थाओं, सामाजिक कुरीतियों, राजनीतिक आंदोलनों और राष्ट्र प्रेम के लिए किये गये बलिदानों का चित्रण उपस्थित किया गया है।

१०] गोदान [१९३६]

प्रेमचंदजी की अंतिम और महानतम कृति' गोदान' है। इस कृति के कारण ही प्रेमचंद को उपन्यास सम्राट माना गया। यह कृति संपूर्ण हिंदी उपन्यास साहित्य में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।

इसमें ग्रामीण और नागरी-दो कथाएँ साथ-साथ चलती हैं। ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण होरी के रूपमें किया है। होरी भोला से गाय लेता है। सारा गाँव प्रसन्न हो जाता है। केवल उसके दोनों भाई हीरा, शोभा प्रसन्न नहीं होते। हीरा गाय को विष देता है जिस से वह मर जाती है। हीरा गाँव छोड देता है। और हीरा के घर का बोझ होरी पर आ जाता है।

भोला की विधवा बेटी झुनिया का गोबर से प्रेम-संबंध स्थापित होता है और उसके कारण वह गर्भवती होती है। गोबर शहर भाग जाता है।

महाजन होरी की रकम लेता है। उसके हाथ में कुछ भी नही बचता तो धनिया कहती है- "सिसक-सिसककर मरने से तो एक दिन मर जाना फिर भी अच्छा है कब तक पुआल में घुसकर रात काटेंगे और पुआल में घुस भी ले तो पुआल खाकर रहा तो नहीं जाएगा। तुम्हारी इच्छा हो, घास ही खाओ, हम से तो घास न खायी जाएगी।" ११

गोबर शहर से लौटता है और झुनिया को अपने साथ लेकर चला जाता है। वहाँ वह संकट ग्रस्त होकर मजदूरी करता है। इधर होरी का खेत बेदखल होता है। वह अपनी बेटी का विवाह एक अधेड उम्र के व्यक्ति से करा देता है। अंत में मजदूरी करता हुआ वह मर जाता है। ग्रामीण कथा में रायसाब, दरोगा, मातादीन, दातादीन, झुनिया, सीलिया आदि पात्र आते हैं तो शहरी कथा में मेहता, मालती, खन्ना आदि पात्र आते हैं।

निष्कर्ष

प्रेमचंदजी ने अपने युग का सूक्ष्म एवं वास्तव अध्ययन किया था। अपने युग की समस्याओं को उन्होंने अपने उपन्यासों में यथार्थ रूप से चित्रित करने का प्रयास किया हैं। उस युग की समस्याओं में शोषक और शोषित, नगर और ग्राम, नर और नारी, मजदूर और किसान आदि समाज के सभी वर्ग अंतर्भूत हो गये हैं।

= संदर्भ सूची =

स॰ क्र॰	लेखक	पुस्तक	पृष्ठ क्र॰
१	प्रेमचंद	वरदान	६८-६९
२	प्रेमचंद	सेवासदन	३६
३	प्रेमचंद	प्रेमाश्रम	१२
४	प्रेमचंद	प्रेमाश्रम	१२
५	प्रेमचंद	निर्मला	१४३
६	प्रेमचंद	निर्मला	१४४
७	प्रेमचंद	रंगभूमि	३५
८	प्रेमचंद	कायाकल्प	३७२
९	प्रेमचंद	गबन	७४
१०	प्रेमचंद	कर्मभूमि	११४
११	प्रेमचंद	गोदान	१६१